मॉडल सेट-08

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

पुरुषार्थी एवं श्रमशील व्यक्ति ही संसार में अपने अस्तित्व की रक्षा करने में सफल हो सकता है। 'वीरभोग्या वसुंधरा' का ध्येय मंत्र ही मानव-मात्र को उसके निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचाने में सशक्त संबल है। अपने जीवन की संघर्षमयी-यात्रा में प्रत्येक व्यक्ति को अनेकानेक विघ्न-बाधाओं व विपत्तियों से दो-चार होते हुए कर्म-पथ पर निरंतर अग्रसर होना होता है। कर्मरत मनुष्य देर-सबेर अपने अभीष्ट की प्राप्ति कर ही लेता है जबकि कर्मभीरू या कामचोर व्यक्ति भाग्य को कोसता हुआ सदैव दुखी या कुंठित रहता है। अपना बहुमूल्य समय और कई सुअवसर खो कर भाग्यवादी व्यक्ति कभी भी अपनी मनोरथ सिद्धि नहीं कर पाता जबकि अनवरत संघर्ष एवं कर्म के मार्ग में संलग्न कर्मवीर को आत्म-संतोष तो होता ही है, वह पूरे समाज के लिए भी एक आदर्श प्रतिमूर्ति बना जाता है। वास्तव में अपने सपनों को साकार करने के लिए व्यक्ति को पुरुषार्थ का मार्ग आवश्यक रूप से चुनना पड़ता है। अपने पौरुष के द्वारा परिश्रमी व्यक्ति अपने भाग्य की रेखाओं को भी अपने अनुकूल बना लेता है। 'भाग्यं फलति सर्वत्रं न क्रिया न च पौरुषम् उक्ति से कर्महीन व्यक्ति अपना बचाव नहीं कर सकता क्योंकि कर्म की

प्रेरणा देने वाली गीता योग, ज्ञान और कर्म में तल्लीन रहने की सीख देती है। यह सार्वभौम सत्य है कि पुरुषार्थ एवं कर्मपरायणता के द्वारा ही जीवन में चतुर्थ वर्ग अर्थ, धर्म, काम, मोक्षादि फलों की प्राप्ति सम्भव है। इसलिए व्यक्ति को जीवन में प्रमाद और आलस्य त्याग कर अनवरत कर्म-पथ पर संलग्न होना चाहिए।

(क) अपने अस्तित्व की रक्षा करने में कैसा व्यक्ति सफल हो सकता है?

(ख) इस पृथ्वी को कैसा व्यक्ति भोग सकता है?

(ग) भाग्यवादी लोगों की आकांक्षाएँ पूर्ण क्यों नहीं हो पातीं?

(घ) लक्ष्य-प्राप्ति के बाद कर्मवीर को समाज से क्या प्राप्त होता है?

(च) कर्म का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

(छ) चतुर्थ वर्ग का विग्रह कर उनका नाम लिखें।

(ब) निम्नलिखित अपठित गद्यांश का ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। **4 x 2 =8**

आज आतंकवाद ने समूचे विश्व को हिलाकर रख दिया है। विश्वशक्ति का दावा करने वाला अमेरिका भी इससे अछूता नहीं है। भारतवर्ष के अधिसंख्य राज्य भी इससे जूझ रहे है। हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान के सहयोग एवं प्रोत्साहन से भारत में हमेशा हिंसा का तांडव नृत्य चलता रहता है। हम मूक दर्शक बने सीमापार से प्रायोजित इस आतंकवाद का मुँहतोड़ जबाव भी नहीं दे पाते। प्राकृतिक आपदाओं में हुए जानमाल के नुकसान को तो सरकार-प्रशासन यह कहकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं कि इस पर मानव का कोई जोर नहीं किंतु मानव के द्वारा मानव की हत्या के ऐसे सुनियोजित षडयंत्रों का क्या कोई प्रतिकार अथवा समाधान हमारे कर्णधारों के पास नहीं है?

प्रश्न यह उठता है कि हमारी सरकार और नीतिनियंता पुरोधाओं की ऐसी क्या विवशता ह कि वे भारतवर्ष में मकड़जाल की तरह फैले इस 'आतंकवाद' रूपी

दैत्य का संहार नहीं कर सकते। यदि हमने इसी तरह चुप्पी साधे-रखी तो वह दिन दूर नहीं जब शत्रु हमारे धैर्य को कायरता मान कर कभी हमारे घर के अंदर भी घुसने से परहेज नहीं करेंगे। हम कह सकते हैं कि राजनेताओं को दलगत संकीर्णता एवं स्वार्थभाव से ऊपर उठकर एकजुट होकर कुछ ठोस पहल हेतु प्रयत्न करना चाहिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

(क) आतंकवाद विश्व के लिए चुनौती है कैसे?

(ख) लेखक, सरकार और नीतिनियंताओं से क्या अपेक्षा करता है?

(ग) राष्ट्रहित में राजनेताओं को क्या करना चाहिए?

(घ) सुनियोजित और प्रायोजित पदों में प्रयुक्त उपसर्ग बताएँ।

प्रश्न-2. दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें।

10

(क) बढ़ती महँगाई।

(i) महँगाई की मार

(ii) निरंतर बढ़ती महँगाई

(iii) सरकार के दावे

(iv) आमलोगों पर प्रभाव

(v) उपसंहार

(ख) भारतीय एकता

(i) भूमिका

(ii) देश का भौगोलिक स्वरूप

(iii) संविधान में स्थिति

(iv) जातिवाद का प्रभाव

(v) उपसंहार

(ग) कबीरदास

(i) भूमिका

(ii) जन्म एवं पालन-पोषण

(iii) शिक्षा एवं ज्ञान

(iv) अंधविश्वास एवं आडंबर का विरोध

(v) उपसंहार

प्रश्न-3. परीक्षा की तैयारी की जानकारी के विषय में अपने मित्र के पास पत्र लिखें। **5**

अथवा

विद्यालय में सफाई, पेयजल अथवा शौचालय की व्यवस्था के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापक के पास एक आवेदन-पत्र लिखें।

प्रश्न-4. संधि और समास में अंतर बताइयें अथवा विशेषण किसे कहते हैं? उसके भेदों को लिखें। **5**

प्रश्न-5. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। **5 x 1 =5**

(i) पो+अन.....।

(ii) आँख लाल-पीला करना (मुहावरा का अर्थ लिखें).....।

(iii) 'ख' का उच्चारण स्थान..... है।

(iv) नेता का (स्त्रिलिंग).....होता है।

(v) धर्म का (विशेषण).....होता है।

प्रश्न-6. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें:- **5 x 1 =5**

(i) तमाम देश भर में खुशियाली छा गई।

(ii) धन ही झगड़ा का कारण बना ।

(iii) मैंने एक नाग को मारा।

(iv) लड़की कहिस मैं घर जाऊँगी।

(v) तलवार बहादुर लोगों का अस्त्र है।

प्रश्न 7. स्तम्भ 'अ' और 'ब' का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें। 6 x 1=6

स्तंभ-'अ'		**स्तम्भ 'ब'**	
(i)	अमरकांत	(क)	भारतमाता
(ii)	रसखान	(ख)	जनतंत्र का जन्म
(iii)	साँवरदइया	(ग)	बहादुर
(iv)	पं.बिरजू महाराज	(घ)	धरती कबतक घूमेगी
(v)	सुमित्रानन्दन पंत	(च)	गित गित मैं निरखत हूँ
(vi)	रामधारी सिंह दिनकर	(छ)	प्रेम अयनि श्री राधिका

निर्देशः- प्रश्न संख्या 8 से 20 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न 8. मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन कहाँ हो सकता है और क्यों? **3**

प्रश्न 9. मनुष्य बार-बार नाखून को क्यों काटता है? **3**

प्रश्न 10. गाँधीजी बढ़िया शिक्षा किसे कहते है? **3**

प्रश्न 11. मछली को छूते हुए संत क्यों हिचक रहा था? **3**

प्रश्न 12. निम्नलिखित उद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

यदि आप भारत के इतिहास के किसी एक अध्याय का भी सम्यक अध्ययन, व्याख्या विवेचन कर लें तो आप पायेंगे कि हमारे स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाए जाने वाले

इतिहास के सब अध्याय मिलकर एक क्षण के लिए भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते

(i) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

(ii) इसके लेखक कौन हैं? 1

(iii) इस गद्यांश में लेखक का कौन-सा भाव स्पष्ट होता है? 3

प्रश्न 13.'हमारी नींद' शीर्षक कविता की सार्थकता पर विचार करें। 3

प्रश्न 14. दिनकर ने जनता के स्वप्न का चित्र किस तरह खींचा है? 3

प्रश्न 15. कवि रसखान ने माली-मालिन किसे कहा है और क्यों कहा है? 3

प्रश्न 16. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता है? 3

प्रश्न 17. निम्नलिखित पद्य को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें।

''तीस कोटि संतान नग्न तन
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्रजन
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन
नत मस्तक तरूतल निवासिनी।

(i) यह पद्यांश किस पाठ से उद्धृत हैं? 1

(ii) इस पाठ के रचनाकार कौन है? 1

(iii) पद्यांश का भाव स्पष्ट करें। 3

प्रश्न 18. 'ढहते विश्वास' कहानी की लक्ष्मी का चरित्र-चित्रण करें। 3

प्रश्न 19. दही वाली मंगम्मा कहानी में बहू ने सास को मनाने के लिए कौन-सा तरीका अपनाया? 3

प्रश्न 20. कुसुम के पागलपन में सुधार देख 'मंगू' के प्रति माँ, परिवार और समाज की प्रतिक्रिया को अपने शब्दों में लिखें। 4

उत्तर मॉडल सेट-08

उत्तर-1 (अ)

(क) जो व्यक्ति श्रमशील और पुरुषार्थी है, वही संसार में अपने अस्तित्व की रक्षा करने में सफल हो सकता है।

(ख) वीर ही इस पृथ्वी को भोग सकता है। कहा भी गया है 'वीरभोग्या वसुंधरा'।

(ग) भाग्यवादी लोगों की आकांक्षाएँ पूर्ण नहीं हो पातीं, क्योंकि वे अपने पुरुषार्थ पर भरोसा न कर भाग्य पर भरोसा करते हैं।

(घ) लक्ष्य-प्राप्ति क बाद कर्मवीर को समाज से सम्मान प्राप्त होता है और वह समाज में आदर्श की प्रतिमूर्ति बन जाता है।

(च) हमारे जीवन में कर्म का उत्यधिक महत्त्व है। निरंतर कर्म करने से हम अपनी किसी भी आकांक्षा (अभिलाषा) की प्राप्ति कर सकते हैं।

(छ) वह वस्तु या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को उद्योग या परिश्रम करना पड़ता है उसे पुरुषार्थ कहा गया है। पुरूषार्थ के चार वर्ग हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। जीवन में धर्म को प्रधान उद्देश्य मानने वाला 'धर्म-पुरुषार्थी', अर्थ को प्रधान उद्देश्य मानने वाला, 'अर्थ-पुरुषार्थी' काम (भोग) को प्रधान उद्देश्य मानने वाला 'काम-पुरुषार्थी' तथा मोक्ष को प्रधान उद्देश्य मानने वाला 'मोक्ष-पुरुषार्थी कहलाता है।

(ब)

(क) आतंकवाद ने आज समूचे विश्व को त्रस्त कर रखा है। विश्व का शायद ही कोई देश हो जो आतंकवाद से प्रभावित या त्रस्त नहीं है।

(ख) लेखक सरकार और नीति-नियंताओं से यही अपेक्षा करता है कि इन दोनों को अपने-अपने स्तर पर आतकंवाद को समाप्त करने के लिए कृतसंकल्प होना चाहिए। धैर्य या चुप बैठने से काम नहीं चलने वाला है।

(ग) राष्ट्रहित में राजनेताओं को दलगत संकीर्णता तथा राजनीतिक स्वार्थ-भाव से ऊपर उठकर, एकजुट होकर आतंकवाद के विरोध में कुछ ठोस पहल हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए।

(घ) 'सुनियोजित'- 'सु' तथा 'नि'- उपसर्ग

'प्रायोजित'- 'प्र' तथा 'आ' - उपसर्ग

उत्तर-2 (क) बढ़ती महँगाई

महँगाई की मार- मूल्यों में निरंतर वृद्धि का नाम महँगाई है। उत्पादन में कमी और माँग की वृद्धि के कारण वस्तुओं का मूल्य लगातार बढ़ने लगता है। बढ़ते मूल्य के चलते जनता त्रस्त हो जाती है, उसे अपने सीमित आय में महँगाई का सामना करने में बहुत दिक्कत होती है। बढ़ती हुई महँगाई निर्धन जनता के पेट पर ईंट बाँधती है। मध्यम-वर्ग को अपने पारिवारिक बजट में कटौती करने को मजबूर करती है। अपनी-अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष करने वाली निम्न एवं मध्यवर्ग की जनता महँगाई की मार से किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाती है। इन दोनों वर्गों की जनता शिक्षा और स्वास्थ्य पर समुचित ध्यान नहीं दे पाती, 'रोटी और कपड़ा' में ही उलझ कर रह जाती है।

निरंतर बढ़ती महँगाई के कई कारण हैं जिनमें मुख्य है- जनसंख्या-वृद्धि की तीव्रता के कारण पूर्ति का माँग के अनुसार नहीं होना। एक प्रतिशत वार्षिक दर से मुद्रास्फीति तथा वस्तु-उत्पादन में ह्रास, घाटे की वित्तीय व्यवस्था, शहरीकरण की प्रवृत्ति, कालेधन का दुष्प्रभाव, व्यापारी वर्ग में मुनाफाखोरी और जमाखोरी की प्रवृत्ति, प्राकृतिक आपदाएँ आदि। विगत वर्षों में पर्याप्त वर्षा नहीं होने से खाद्यानों का अपेक्षित उत्पादन नहीं हो सका। दलहन और तेलहन की कीमतें आसमान छूने लगीं। इनका बाजार पर बुरा प्रभाव पड़ा।

सरकार आँकड़े पेश कर महँगाई को नियंत्रित बताती है पर वास्तविकता इसके विपरीत है। सरकार को महँगाई को नियंत्रित करने के ठोस उपाय करने चाहिए।

महँगाई के चलते आम लोगों का जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। उनकी क्रयशक्ति बहुत ही कम हो गई है।

महँगाई को दूर करने के चार कारगर उपाय हैं- कर चोरी को रोकना, राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबंधन एवं संचालन में अपेक्षित सतर्कता का होना, सरकारी खर्चों में योजनाबद्ध तरीके से कमी लाना तथा माँग के अनुसार उत्पादन में वृद्धि करना। पूर्णविवरण कमरतोड़ महँगाई को दूर करने के लिए राज्य सरकारों एवं केंद्र सरकार को मिलजुल कर प्रयत्न करना होगा साथ ही भारत की तमाम जनता को सतर्क होना होगा।

उत्तर-2 (ख) 'भारतीय एकता'

भारत भौगोलिक तथा आचार-निष्ठाओं की दृष्टि से विभिन्नताओं का देश है पर इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता है, 'विभिन्नताओं में अभिन्नता' का होना। यह अभिन्नता ही हमारे देश की विशिष्ट पहचान है। 'अनेकता में एकता' ही हमारी सांस्कृतिक देन है जिसने भारत को एकता के सूत्र में बाँध रखा है।

''यह उत्तर में बर्फ से ढँके हिमालय से लेकर दक्षिण में धूप से सराबोर तटवर्ती- गाँवों, दक्षिण-पश्चिम तट पर आर्द्र उष्णतटबंधीय जंगलों, पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी के उपजाऊ क्षेत्र से लेकर पश्चिम में थार रेगिस्तान तक फैला है।'' भारत को मुख्य रूप से छः अंचलों में विभक्त किया जा सकता है। ये अँचल हैं- उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, मध्यवर्ती तथा पूर्वोत्तर अंचल।

भारत राज्यों का संघ है। यहाँ संसदीय प्रणाली की सरकार है। संविधान में भारत को धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य कहा गया है जो भारतीय एकता का मूल आधार है। संविधान में सम्पूर्ण भारत के लिए एक समान नागरिकता की व्यवस्था की गई है। संविधान के भाग चार के अनुच्छेद 51 'क' में नागरिकों के कर्तव्य के

सम्बन्ध में कहा गया है कि इन्हें धर्म, भाषा और क्षेत्रीय तथा वर्ग सम्बन्धी भिन्नताओं को भूल कर सद्भाव और भ्रातृत्व की भावना को प्रोत्साहन देना चाहिए।

धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि की संकोर्णता की तरह ही जातिवादी संकीर्णता ने भी भारतीय एकता को बुरी तरह प्रभावित किया है। भारतीय नागरिकों का यह कर्तव्य बनता है कि वे इन कथित संकीर्णताओं को भूल कर देश की एकता एवं अखण्डता को मजबूत करने का प्रयास करें। इसी से देश समृद्ध और विकसित हो सकगा।

देश के प्रत्येक नागरिक को देशहित में सोचना चाहिए। देश के आगे धर्म, संप्रदाय, जाति, भाषा और क्षेत्रविशेष का महत्त्व नहीं होता। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अलगावादी तत्वों के प्रति सावधान रहें और देश की एकता और अखण्डता के लिए अपने प्राण उत्सर्ग करने को सदा तत्पर रहें।

उत्तर-2 (ग) कबीरदास

कबीरदास भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने 'निर्गुण पंथ' चलाया। इनके भगवान निराकार रूप में थे। इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज में छाए आडम्बर, छुआ-छूत तथा अंध परम्पराओं को दूर करने का प्रयास किया।

इनके जन्म के संबंध में अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। ऐसा कहा जाता है कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी से हुआ जो लोक-लाज से बचने के लिए नवजात कबीर को वाराणसी की लहरतारा नदी (तालाब) के किनारे फेंक दिया था। इनका पालन - पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया । स्वयं कबीरदास ने अपने को जुलाहा होने की बात कही है - 'तू ब्राह्मण, मैं काशी का जुलाहा' । इनके जन्म संवत् को लेकर मतभेद मिलता है। आचार्य शुक्ल ने इनका जन्म संवत् 1456 तथा निधन संवत् 1575 माना है।

कबीरदास ने कागज और कलम नहीं छुआ था, न कहीं विधिवत् शिक्षा ही पाई थी। वे खुद स्वीकार करते हैं- 'मसि कागद छुयो नहिं कलम गह्यो नहिं हाथ'। इन्होंने घूम-घूम कर ज्ञान प्राप्त किया, साधुओं की संगति की तथा

खुद अनुभव से ज्ञान प्राप्त किया। इनके गुरु के रूप में रामानन्द एवं शेख तकी का नाम आता है। इनकी वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से है।

कबीरदास की रचनाओं में मौलिक विचारों का प्रतिपादन, चली आ रही परम्पराओं रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का खंडन-मंडन तथा नीतिपरक दोहों में मानवोपयोगी संदेश दिये गये हैं। वे सगुण ब्रह्म, मूर्ति-पूजन, तीर्थ, व्रत, जटा-जूट धारण, दाढ़ी-मूँछें बढ़ाने, चंदन-टीका लगाने को उचित नही मानते। उनका कहना है कि हमारा ईश्वर घट-घट वासी है, सर्वव्यापक तथा अविनाशी है। वह अवतार नहीं लेता, न लीलाएँ करता है।

कबीरदास कर्म करने पर जोर देते थे, जाति-पाति एवं दिखावा उन्हें पसन्द नहीं था। उनकी कथनी और करनी में फर्क नहीं था। वे कहते हैं- 'जाति-पाति पूछे नहिं कोई। हरि को भजै से हरि का होई'। उनके दोहों में जो उपदेश है वह आज भी हमें प्रेरित करता है -

'माया मुई न मन मुआ, मरि -मरि गया शरीर।
आशा तृष्णा न मुई, यों कहि गया कबीर।।'

समाज-सुधार तथा मानवीय प्रेम का प्रसार करने में कबीरदास की देन महत्त्वपूर्ण है। वे भारतीय धर्म, संस्कृति, परम्परा एवं विचारधारा के संपोषक थे। उनके आने से समाज की अनेक कुरीतियों, बुरी परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों का खात्मा हुआ। उनके उपदेश सरल तथा प्रसंगानुकूल हैं। वे आज भी हमें नयी सीख देते हैं। हमारी आँखें खोलते हैं तथा हमें नए चिंतन प्रदान करते हैं। वे एक ऐसे कर्मयोगी थे जो अंधविश्वासों की खाई पाटने के लिए अपना घर जलाने को सदा तैयार रहते थे। वे स्वयं ही कहते हैं -'जो घर जारै आपना, चलै हमारो साथ'। वस्तुतः कबीर अपने जमाने के एक बहुचर्चित क्रांतिकारी, सुधारक, संत और कवि थे।

उत्तर-3

प्रिय राहुल, दानापुर,

2 फरवरी, 2016

तुम्हारा पत्र कुछ दिन पूर्व मिला था। पत्रोत्तर देने में विलम्ब हुआ इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। तुमने अपने पत्र में लिखा है कि मैं अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के सम्बन्ध में तुम्हें विस्तृत जानकारी दूँ।

मेरी वार्षिक परीक्षा अगले सप्ताह शुरू होने जा रही है। मैं परीक्षा की तैयारी में कमर कस कर लगा हुआ हूँ। मैंने सारे विषयों की तैयारी कर ली है, पर अँगरेजी के पत्र में थोड़ी कठिनाई हो रही है। इसके लिए आदरणीय शिक्षक त्रिपाठीजी की सहायता ले रहा हूँ। व्याकरण वाला अंश पूरा हो चुका है। व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक प्रश्नों की तैयारी चल रही है। तुम्हारे सुझावों पर भी ध्यान दे रहा हूँ।

पता- राहुल राय तुम्हारा मित्र

आर्यकुमार रोड, मालवीय नगर नीरज कुमार

गया, बिहार।

अथवा-3

सेवामें,

प्रधानाध्यापक महोदय,

उच्च विद्यालय, हाजीपुर

द्वारा- वर्ग-शिक्षक।

विषय-विद्यालय में सफाई, पेयजल, तथा शौचालय की व्यवस्था के सम्बन्ध में।

महाशय,

विनम्रतापूर्वक मैं विद्यालय की कतिपय त्रुटियों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। आपकी कर्तव्यपरायणता और उदारता को दृष्टि में रखकर ही मैं यह साहस कर रहा हूँ। कृपा कर आप इसे मेरी धृष्टता नहीं समझंगे।

चतुर्थवर्गीय कर्मचारी दिनेश विद्यालय की सफाई पर ध्यान नहीं देते हैं। अध्ययन-कक्षों में बहुत दिनों से झाड़ू नहीं लगी है। पेयजल का स्रोत भी टूटा पड़ा है तथा शौचालयों की स्वच्छता पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

अत: आपसे साग्रह निवेदन है कि मेरे उपर्युक्त निवेदनों पर यथाशीघ्र ध्यान देते हुए विद्यालय के आदर्श स्वरूप की रक्षा की जाय। आपकी कृपा से मैं ही नहीं विद्यालय के सभी छात्र-छात्राएँ आपके आभारी रहेंगे।

दिनांक-10 फरवरी, 2017

विश्वासभाजन
राहुल कुमार, वर्ग नवम् 'ब'
क्रमांक-20

उत्तर 4- दो वर्णों के (अक्षरों के) मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तित रूप) को 'संधि' कहते हैं। जैसे-महा+ईश=महेश। यहाँ 'आ'+ 'ई' के मेल से 'ए' का रूप परिवर्त्तन हुआ है। अर्थात 'आ' और 'ई' की संधि हुई है।

'समास' में अक्षरां का नहीं वरन् दो या दो पदों का मेल होता है। उदाहरण- 'रसोईघर'। इसमें 'रसोई' और 'घर' दो पद है। जो आपस में मिलकर एक 'रसोईघर' हो जाता है।

उत्तर 5- (i) पवन

(ii) क्रोध करना

(iii) कंठ

(iv) नेत्री

(v) धार्मिक

उत्तर 6-(i) देश भर में खुशहाली छा गई।

(ii) धन झगड़ा का कारण बना।

(iii) मैंने एक नाग मारा।

(iv) लड़की ने कहा कि मैं घर जाऊँगी।

(v) तलवार बहादुरों का शस्त्र है।

उत्तर 7- **स्तम्भ 'अ' स्तम्भ 'ब'**

I - ग

II - छ

III - घ

IV - च

V - क

VI - ख

उत्तर 8- लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन कोलकाता, मुंबई, मद्रास आदि शहरों में नहीं वरन् इसके गाँवों में हो सकते हैं। भारत एक 'कृषि-प्रधान' देश है। इसकी संस्कृति कृषि से जुड़ी है। अतः यदि हम भारत का दर्शन करना चाहते हैं तो हमें इसके गाँवों के दर्शन करने होंगे। गाँवों में ही भारत की आत्मा का निवास है। इसके लिए भारत के गाँवों का परिभ्रमण करना होगा।

उत्तर 9- नाखून पशुता का प्रतीक हैं। मनुष्य की पशता जितनी बार काटी जाती है, वह उतनी ही बार जन्म ले लेती है और मनुष्य है कि वह अपने से पशुता को निकाल कर सच्चे-अर्थों में मनुष्य बना रहना चाहता है। अतः पशुता के प्रतीक नाखून जब भी बढ़ते हैं तब मनुष्य उन्हें काट डालता है।

उत्तर 10- गाँधीजी सबसे बढ़िया शिक्षा 'अहिंसक प्रतिरोध' को मानते हैं। सही, बढ़िया और श्रेष्ठ शिक्षा वही है जो हमें बुराई, अवगुण हिंसा, अनैतिकता आदि का साहसपूर्वक विरोध करने के लिए तैयार करे। अहिंसक प्रतिरोध से विपक्ष की शारीरिक क्षति नहीं होती, अपितु उसके मन की सारी दुर्भावनाएँ हमेशा के लिए समाप्त हो जाती हैं। इसी अर्थ में यह 'बढ़िया शिक्षा' है।

उत्तर 11- संतू मछलियों को बड़े प्यार से देख रहा था। वह मछलियों को छूकर देखना चाहता था पर उसे डर लगता था। वह मछली को छूते हुए हिचक रहा था कि कहीं मछली उसे काट न ले। अपने बड़े भाई (लेखक) के बहुत समझाने बुझाने पर उसने एक बार हिम्मत बटोरी और सबसे ऊपर वाली मछली को ऊँगली से छुआ भी पर फिर डर कर अपना हाथ खींच लिया। उसकी हिचक अभी दूर नहीं हुई थी। अब भी उसके भीतर डर था, जिसके चलते वह मछली को नहीं छू पा रहा था।

उत्तर 12-(i) यह गद्यांश 'शिक्षा और संस्कृति' पाठ से उद्धृत है।

(ii) इस पाठ के लेखक महात्मा गाँधी हैं।

(iii)आज की शिक्षा पद्धति में व्यावहारिकता का महत्त्व अपेक्षित है।

सभी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के माध्यम से दी जानी चाहिए।

उत्तर 13- 'हमारी नींद' शीर्षक कविता अत्यन्त सार्थक है। कवि कहता है कि हमारी नींद में जीवन अपनी स्वाभाविक गति से विकसित होता रहता है, भले ही हमें इसका एहसास न हो। जीवन तो निरंतर गति का नाम है। यह नींद और जागरण दोनों में समान भाव से गतिमान है।

उत्तर 14- ''दिनकर'' के अनुसार जनता के स्वप्नों में अपूर्व तेज, दाहकता और घोर निराशा के अंधकार को दूर करने की क्षमता है। जनता के स्वप्न अजेय एवं रौद्ररूप धारण करने वाले हैं।

उत्तर 15- 'माली-मालिन' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि 'माली-मालिन के युग्म-प्रयास से जिस तरह वाटिका रंगों और सुगंधों से जीवंत और चित्ताकर्षक बनी रहती है, उसी तरह श्री राधिका और श्रीकृष्ण (नंदनंद) की लीलाओं से प्रेम रूपी वाटिका को जीवंतता प्राप्त होती रहती है।

उत्तर 16- बूढ़ा चौकदार वृक्ष हमारी बूढ़ी अनुभवी पीढ़ी के साथ-साथ सतर्क बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक है जो अच्छे-बुरे को दूर से ही पहचान लेता है। बूढ़ा चौकीदार वृक्ष कवि को आते देख दूर से ही ललकार कर पूछता था, ''कौन?'' कवि जवाब देता था ''दोस्त'' जिसे सुनकर चौकीदार वृक्ष दोस्ती के आगे नतमस्तक हो जाता था। यह सम्वाद दर्शाता है कि अनुभवी बुद्धिजीवी वर्ग हर खतरे को भाँप सकता है। जिसे आज अनदेखा किया जा रहा है।

उत्तर 17-(i) यह पद्यांश 'भारतमाता' पाठ से उद्धृत है।

(ii) इस पाठ के रचनाकर 'सुमित्रानन्दन पंत' हैं।

(iii)भारत की तीस कोटि (तीस करोड़) संतान अर्द्धनग्न, अर्धक्षुधित, शोषित निहत्थी, मूढ़ असभ्य, अशिक्षित, निर्धन स्वाभिमान-रहित तथा निराश्रित है। उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय है।

उत्तर 18- लक्ष्मी भारतीय गृहिणी है। वह जीवन में कर्म को अपेक्षित महत्त्व देती है। वह बाँध की सुरक्षा में जुटे बच्चों से कहती है, जुटे रहो बच्चों, ।'' वह नीयति के समानांतर कर्म का मार्ग तैयार करती है और उसी पर चलना श्रेयष्कर समझती है। उसमें अदम्य साहस है। बाँध टूटने का समाचार मिलते ही वह अपने दोनों बच्चियों और दूध पीते बच्चे को लेकर सुरक्षित स्थल की

ओर जाती है। वह ममतामयी माँ, कर्मठ, सामाजिक चेतना से परिपूर्ण, कर्म की उपासिका और सच्चे अर्थों में गृहिणी है। बगैर टूटे वह अच्छे दिनों की प्रतीक्षा करने वाली तपस्विनी है।

उत्तर 19- 'दही वाली मंगम्मा' कहानी में बहू ने सास को मनाने के लिए अपने बच्चे को माध्यम बनाया। उसने अपने बच्चे को सिखाया कि तू अपनी दादी के पास चला जा, वह मिठाई देती है। हमारे घर कदम मत रखना। बच्चा दादी के पास चला गया। दादी पोते को पाकर निहाल हो उठी और धीरे-धीरे सास-बहू के बीच की दूरी सिमटने लगी।

उत्तर 20- शहर के कन्या विद्यालय में पढ़ने वाली कुसुम तीसरे महीने तक अच्छी (पागलपन में सुधार) हो गई। माँ, परिवार के सदस्यों और गाँव के लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ। परिवार के सदस्यों और समाज के लोगों ने माँ को समझाया- ''माँजी आप मंगू को एक बार अस्पताल में भर्ती करके तो देखे। जरूर अच्छी हो जायगी।'' जिदंगी में पहली बार माँ ने अस्पताल का विरोध नहीं किया। चुपचाप लोगों की सलाह सुनती रही।